परिवर्तन

कहानी

आजकल मम्मी जी को पता नहीं क्या हो गया है? मुंह ही मुंह में कुछ बड़बड़ाती रहती हैं। कुछ पूछो तो कहती हैं-'कब बड़बड़ा रही थी?' उनकी आंखें दूर क्षितिज में ना जाने क्या शून्य में कुछ खोजती रहती हैं। खाने-पीने में भी उनकी रुचि कम होती जा रही है। मम्मी जी का जो अधिकतर समय घर में बने मंदिर में बीतता था वह अचानक कम हो गया है। न जाने क्यों उन्होंने अपना अधिक समय सजने-संवारने में लगा दिया है। नेत्रों में काजल, रंगीन साड़ी, नाखूनों पर नेल पालिश-दोनों बहुएं देखती तो साड़ी में मुंह छिपाकर हंसती।

मम्मीजी जी कभी-कभी बहुओं से पूछती-'क्यों यह साड़ी कैसी रहेगी?'

'मम्मी जी आपका रंग एकदम साफ है इसलिए कुछ भी पहनें आप तो सुंदर लगती हैं....देखिये ना आप के इस उम्र में बाल भी काले हैं-हमारा तो पता नहीं आपकी उम्र तक क्या हाल होगा? अभी से सफेद बाल कालों में से झांकने लगे हैं' बड़ी बहू कहती तो मम्मी जी सुनकर मुग्ध हो जाती थीं।

नियम-संयम वाली मम्मी जी में ना जाने ऐसा कैसा परिवर्तन आ गया था कि सुबह पांच बजे उठने वाली मम्मी जी आठ बजे तक सोती रहती थीं। उनका कमरा अलग था जहां वह बाबूजी के साथ रहती थीं। सर्व सुविधायुक्त उस कमरे में पंखे, टेलीविजन, छोटा ए.सी., बड़ा पलंग, अलमारी, लेटरिन-बाथरुम कम्बाइंड होने के साथ गीजर भी लगा था तथा फ्रिज में ठंडे पेय के अतिरिक्त खाने की थोड़ी बहुत सामग्री भी रहती थी। बाहर गैलरी में झूला था जिस पर वह बैठकर दूर तक देखती रहती थी, फिर अचानक गर्दन लुढ़का देती और मुंह से झाग निकलने लगता-वह तो कोई न कोई उन्हें देखता रहता था इसलिए दौड़ कर 'मम्मी जी-मम्मी जी' कहकर मुंह पर पानी डालते। होश में आने पर अपरिचित दृष्टि से देखकर कहती-'क्या बात है? भीड़ क्यों लगा रखी है?'

'मम्मी जी क्या हो गया था?'

'कुछ नहीं' और वह अजीब सी नजरों से देखती, कहती कुछ नहीं थी।

छोटी उम्र में मम्मी जी का विवाह बाबूजी से हो गया था। उनको ससुराल में उपवास, सती सावित्री जैसी नायिकाओं के चरित्र जीने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। प्रातः जल्दी उठना और सबके बाद सोना। स्त्री धर्म के सब कर्म बता दिये गये थे। रात डरते हुए बाबूजी के कमरे में प्रवेश करती और सब कुछ सहन करती जो पति उन के करवाता-यही तो स्त्री धर्म है। छोटी उम्र में ही दो पुत्र-शशांक और मनीष उनकी गोद में आ गए थे। उनके लालन पालन में मम्मी जी लग गईं थीं।

एक दिन अचानक बाबूजी की लाश खेत से उठाकर लाई गई थी। सांप ने कब काट लिया और घर तक आने का समय भी नहीं मिला था। स्त्री धर्म में-विधवा धर्म का निर्वाह कैसे किया जाता है यह भी मम्मीजी को पता था। मम्मी जी ने उपवास अधिक शुरु कर दिए और दिन में दो बार स्नान करना तथा धार्मिक पुस्तकों का पाठ करना। घर में हवन कथा इत्यादि करना उनके जीवन के लक्ष्य हो गए थे। मम्मी जी का एक ही लक्ष्य था कि-शशांक और मनीष पढ़ लिख जाये। घर की सम्पत्ति एवं माली हालत ठीक होने के चलते आगे की पढ़ाई में कोई दिक्कत नहीं आई थी।

पूर्व में सब विचार कर रहे थे कि 20-22 वर्षों की यह विधवा बच्चों को छोड़ कर दूसरा विवाह कर लेगी, लेकिन स्त्री धर्म क्या होता है-यह उन्हें मालूम था जिसके परिणाम स्वरूप कभी कोई वासना उन्हें छू भी नहीं गई थी। प्याज, लहसुन जैसी वस्तुओं से उन्होंने परहेज कर लिया था। कभी बीमार पड़ने पर भोजन छोड़ कर अपने घर में बने भगवान के कक्ष में जाकर चटाई पर लेट जाती थीं जहां बाबूजी का एक चित्र मुंछों पर ताव देता हुआ रखा था, जो यह साबित कर रहा था कि-वह यौन शक्ति से परिपूर्ण है जिसके चलते दो लड़के पैदा कर दिये। वह उन्हें देखती और आंखों में आंसू भर कर कहती-'अब अपने पास बुला लो, जीवन बड़ा भारी लगने लगा है।' लेकिन विधाता को कुछ और ही मंजूर था-दोनों बेटों को बढ़िया नौकरी मिल गई और मम्मी जी ने दोनों का विवाह कर दिया। दोनों बहुएं मम्मी जी का बहुत सम्मान करती थीं।

मम्मी जी के लिए एक कमरा अलग से था जहां वह जाप इत्यादि करती रहती थीं। बड़ी बहू के बेटे की उम्र 8-9 वर्ष हो चुकी थी। मम्मी जी का यह परिवर्तन किसी के समझ में नहीं आ रहा था। घर की नौकरानी को एक बार अपने कमरे में सफाई के समय उन्होंने पूछ लिया-'क्योंरी कमला आजकल तेरे घर वाले के क्या हाल हैं?'

'माँई जी, बीमार पड़ा है। जवानी में खूब दारू पी अब बिस्तर पकड़ लिया' उसने पोंछा लगाते हुए कहा।

'और कमला तेरा जी होता है तो क्या करती है?'

कमला को मम्मी जी से ऐसी उम्मीद नहीं थी कि इस तरह का बेहूदा सवाल वह पूछेंगी। वह चुप रही तो मम्मी जी की आंखों में मानों कामरस घुल गया था- हंसकर कहने लगी-'अरी बता ना-क्या कहीं जाती है? या किसी को बुलाती है---?'

'माँई हम ऐसे नहीं हैं' कहकर वह पोंछा लगाने लगी तो मम्मी जी ने जोरों से हंसकर कहा-'अरी सब जानती हूं, तू क्या-क्या करती होगी?'

कमला तेजी से बाहर निकल गई। छोटी बहू को मम्मी जी वाली बात कही लेकिन बदनामी तो परिवार की होती इसलिए उसे चुप करवा दिया।

बड़ी बहू ने अपने पति को भी यह बात कही तो उन्होंने जोरदार प्रतिरोध किया-'क्या बकवास करती हो। युवा अवस्था में वह संयम त्याग से रही अब जीवन के अंतिम चरण में-छिः---छिः:....ऐसी बात नहीं करते।'

'मैं उन्हें बदनाम नहीं कर रही, मैं तो चाह रही हूं कि वह मानसिक रूप से बीमार है उनका इलाज किसी मनोवैज्ञानिक से करवा कर देख लें।'

-'शट्अप' कहकर कमरे की बत्ती बुझा कर वह सो गए।

हद तो तब हो गई जब कमला बीमार पड़ गई तो उसकी जगह घर का काम करने के लिए उसका बेटा दिलपू आया था। पन्द्रह सोलह बरस का वह लड़का हाफ पेंट पहने दौड़-दौड़कर काम कर रहा था। छोटी बहू वहीं थी। मम्मी जी ने अचानक दिलपू से कहा-'दिलपू रे-तू तो बड़ा हो गया?'

'नहीं मम्मी जी' उसने झेंपते हुए कहा।

'मैं इसलिए कह रही थी कि कम से कम हाफ पेंट में अण्डरवेयर तो पहन लेता-देख सामने हाफपेंट की चैन भी खुली है।' सच में उसकी चैन खुली थी, वह बुरी तरह से शर्मा गया। छोटी बहू का मुंह शर्म से लाल हो गया। मम्मी जी यही बात कहां पर समाप्त करने वाली थीं उन्होंने छोटी बहू से कहा-'तू कितनी शर्मा रही है....अरी जीवन का सच तो यही है। रात नींद नहीं आ रही थी तो मैं बालकनी में घूम रही थी। तब तेरे कमरे से ना जाने कैसी-कैसी आवाजें आ रही थी-क्या देर रात में सोई थी? या तबियत खराब थी--?' छोटी बहू तो एक पल भी नहीं ठहरी अपने कमरे में जाकर दरवाजा बंद करके रोने लगी थी। मम्मी जी बहुत खतरनाक स्थिति में जा पहुंची थीं, यदि अभी इलाज नहीं करवाया तो पूरे परिवार की प्रतिष्ठा कब मिट्टी में मिला दें कह नहीं सकते। बड़े भैया और छोटे ने तय किया कि जल्दी ही डाक्टर को बता देंगे, लेकिन डाक्टर को क्या कहेंगे? यही कि हमारी मां ना जाने क्यों आजकल ऐसी सैक्सी बातें करके प्रसन्न होती है। सुबह दूध वाला आता था। नाटे कद का रहा होगा तीस-बत्तीस वर्ष का, छाती पर घने बाल, हमेशा मुस्कुराती मम्मी जी से कहता-'कैसी हो?'

मम्मी जी उसे आशीर्वाद देती थी। यह एक-दो बरसों पूर्व की बात थी। अब तो मम्मी जी दूध का बर्तन लेकर दरवाजे पर जा पहुंचती-'क्यों रे गब्बर, क्या हाल है? घरवाली कैसी है-?'

'मम्मी जी आपका आशीर्वाद है।'

'तू तो दिन पर दिन गदराता जा रहा है रे-घरवाली मजे में तो है--?' वह शर्मा जाता।

'कैसा शर्माता है, जैसे अभी भी 17-18 बरस का हो, पूछ रही हूं-कोई यह तो नहीं पूछ रही कि रात क्या किया था?'

गब्बर का दूध नापने का पैमाना कांपने लगता था। मम्मी जी दूध लेते उसका हाथ छू लेतीं थीं जिसमें ढेर सारे कम्पन होते थे।

एक बार उन्होंने गब्बर से कहा-'क्यों रे तेरी छाती पे इतने बाल है, वो तो तुझे रीछ कहती होगी--?' उसने मम्मी जी की आंखों में देखा जिसमें आमंत्रण था। एक वर्जित व्यक्ति को जीत लेने की चाह थी। गब्बर ने गर्दन नीची की और चला गया लेकिन ये सम्बाद बेटों ने भी सुन लिया था लेकिन मम्मी जी से क्या कहा जा सकता था। दोपहर को टीनू का दोस्त आया हुआ था। घर में उस समय सब अपने कमरे में थे। मम्मी जी ने उसे देखा और पास में सोफे पर बैठाया और बड़े प्यार से प्रश्न किया-'कुछ ठंडा-गर्म पियेगा?'

'ना दादी जी।'

मम्मी जी उसके पास जा बैठी, 'पांवों में इन दिनों बहुत दर्द रहता है' कहकर पांव पर से साड़ी ऊपर की।

'कब से दर्द है?'

'पांछ-छैः महिने से'

'मैं तेल लगा दूं...?' उसने प्रस्ताव रखा। मम्मी जी एक दर्द निवारक तेल ले आईं और उस लड़के को दे दिया, पांव की साड़ी इतनी ऊपर थी कि पिण्डलियों के अतिरिक्त जांघ का भी कुछ हिस्सा दिखलाई दे रहा था। वह लड़का पांव में पिण्डलियों में तेल लगा रहा था। मम्मी जी आंखें बंद किए आनंद ले रही थीं।

-'तेरे हाथों में तो जादू है' कहकर मम्मी जी ने अपना मुंह आगे करके उसके गालों को चूमने के स्थान पर उसके गुलाबी होठों पर अपने अधर रख दिये। पलभर का यह एहसास था लेकिन परिवार के सदस्य में बड़ी और छोटी बहू ने देख लिया था कि 'मम्मी जी ने क्या किया है?' बहू को आया देख साड़ी नीची की और तेल की शीशी लेकर अंदर अपने कमरे में चली गई।

आखिर मम्मी जी को हो क्या गया है? क्या किसी को जीतना चाहती हैं? या स्वयम् पराजित होकर जीतने का दम्भ भरना चाहती हैं? या यह बतलाना चाह रही हैं कि इतनी उम्र के बाद भी मुझमें कितनी आकर्षण की क्षमता शेष बची है----लेकिन सब कुछ असामान्य हो रहा था। यदि इसका इलाज नहीं किया गया तो कब, क्या हो जाएगा कहा नहीं जा सकता है। आखिर दोनों बेटों ने सलाह की और अपने एक अच्छे चिकित्सक मित्र से बात की और मम्मी जी को बहला-फुसलाकर उसके अस्पताल में ले जाया गया।

दो-तीन दिनों में रिपोर्ट भी आ गई। यह हल्यूसिनेशन्स याने मनोभ्रान्तियों की वजह से बेन ट्यूमर है। दांया या बांया फ्रन्टल लोब ट्यूमर जिसके चलते मस्तिष्क का वह भाग सम्वेदनहीन हो जाता है जो कि यौन सम्वेदनाओं को नियंत्रित करता है। ऐसे लोग पर्सनालिटी डिसआर्डर का शिकार हो जाते हैं तथा फ्रन्टल लोब ट्यूमर को जिम्मेदार माना जाता है। ऐसे मरीज पैडिफिलिक होते हैं, याने बच्चों के साथ या अपनी उम्र से बहुत छोटों के साथ सैक्स क्रियाएं करना। यह विकास दिमाग के उस हिस्से को नष्ट कर देता है जो कहता है कुछ करने या कहने से पूर्व विचार करे। मम्मी जी की बीमारी इस ट्यूमर के चलते थी और उन्हें अब सर्जरी की आवश्यकता थी लेकिन ऐसे बड़े ऑपरेशन के पूर्व उन्हें समझाना एक कठिन कार्य था। वह सब कुछ ऐसे सामान्य जीवन के कर्म की तरह कर रही थीं जहां कोई भी वर्जना उन्हें मानों छू भी नहीं गई हो। लेकिन यदि इन सब बातों से मम्मी जी को अवगत कराया जाये तो इसका दुष्परिणाम भी आ सकता है, फिर क्या उन्हें उनके हाल पर छोड़ दे....? लेकिन यदि कभी ऐसा कुछ उन्होंने कर लिया तो बदनामी होते देर नहीं लगेगी। वैसे भी जिस गति से वह आगे बढ़ रही हैं वह खतरनाक ही है, किंतु घर के सदस्य इस बात को ना जाने किस अर्थों में लेंगे? मम्मी जी से बात करने की जिम्मेदारी बड़े बेटे ने ली, उसे पूरा अधिकार दिया गया था। क्रमशः

- डॉ.गोपाल नारायण आवटे

प्रजातंत्र की दुकानें

व्यंग्य

आइये भाइयों और बहनों, आइये पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस से लेकर आज तक हमारे प्रजातंत्र की इन दुकानों में सेल पर लगातार टोकरी-टोकरी छूट चल रही है। आइये-आइये, इन दुकानों के सामने रखे ई.वी.एम. नामक यंत्र में इनके नाम के छापों के आगे उंगली मारिये और मुफ्त रोटी कपड़ा मकान का लाभ उठाइये। देर करेंगे तो पछतायेंगे। भीड़ होगी तो धक्कामुक्की खायेंगे। आइये,आइये।

यह जो नेहरु, गांधी की तस्वीरों से सजी-धजी पहली दुकान देख रहे है न। इसके हलवाई फस्ट क्लास गमार्गमं समाजवादी हलुआ बेचते हैं। बाहर लम्बी-चौड़ी दुकान देख रहे हैं न, इसके आका और काका गरीबों की गरीबी हटाने के एक्सपर्ट हैं। ये पिछले पच्चीस-तीस सालों से जोर लगा-लगाकर गरीबों की गरीबी हटाने की जी मार कोशिश कर चुके हैं पर गरीबों की यह बेशर्म गरीबी है कि इस देश से हटने को तैयार ही नहीं।जाम हुई पड़ी है। क्या बताएं,चुड़ैल अगंद का पाँव हो गई है। इंच भर भी इधर से उधर टसमस होने का नाम ही नहीं लेती। सारे दरबारी एक साथ जोर लगाकर पसीने-पसीने हो गये बेचारे पर वाह री दुष्टा,थोड़ी तो सरकती। हताश-निराश दरबारियों ने थक-हारकर अपनी खुद की गरीबी हटाने में अपनी भलाई समझी। बुरा हो वक्त और इस प्रजातंत्र का,आजकल उनकी दुकान जरा 'उंची दुकान फीका पकवान'।

यह जो रंगीन बल्बों से जगमगाती जयप्रकाश नारायण और लोहिया जी की तस्वीरों से सजी दूसरे नम्बर की दुकान देख रहे है न। इसके हलवाई फस्ट क्लास गमार्गमं समाजवादी हलुआ बेचते हैं। बाहर लम्बी-चौड़ी दुकान देख रहे हैं न, इसके आका और काका गरीबों की गरीबी हटाने के एक्सपर्ट हैं। ये पिछले पच्चीस-तीस सालों से जोर लगा-लगाकर गरीबों की गरीबी हटाने की जी मार कोशिश कर चुके हैं पर गरीबों की यह बेशर्म गरीबी है कि इस देश से हटने को तैयार ही नहीं।जाम हुई पड़ी है। क्या बताएं,चुड़ैल अगंद का पाँव हो गई है। इंच भर भी इधर से उधर टसमस होने का नाम ही नहीं लेती। सारे दरबारी एक साथ जोर लगाकर पसीने-पसीने हो गये बेचारे पर वाह री दुष्टा,थोड़ी तो सरकती। हताश-निराश दरबारियों ने थक-हारकर अपनी खुद की गरीबी हटाने में अपनी भलाई तरक्की उनकी जानमारू मेहनत का कमाल है। आंत्रेप्न्योर हो तो ऐसा।

यह तीसरी सजी-धजी दुकान देख रहे हैं न,यह 'अमार सोनार बांग्ला' वाली कड़क दीदी का है। ये तृणमूल का बना जायकेदार नर्म, नर्म, मीठा-मीठा रसोगुल्ला बेचती हैं। देसी-विदेसी का फर्क नहीं मानती। फिर चाहे बांग्ला देसी हो कि रोहिंग्या सबको आदर पूर्वक प्रेम से अपनी दुकान के अंदर बैठाकर अपने हाथों से रसोगुल्ला का पेट भर सेवन करवाती हैं। पैसा-वैसा नहीं लेती, बस उनकी दुकान के सामने रखे ई.वी.एम.में उनके त्रिमूल के छापे पर अंगुली भर आपको मारना है। हाँ, भूलकर वहाँ 'जय श्री राम' मत कहना वरना दीदी वहीं के वहीं तुम्हारा खाया सारा रसोगुल्ला पुलिस वालों के हवाले कर पिछवाड़े से निकलवा लेंगी।

हाथी की शानदार विराट मूर्ति से सजी 'माया बहन एंड बदर्स' की यह चौथी दुकान अब बढ़ते-बढ़ते फाइव स्टार होटल में परिवर्तित हो गई है।पहले सिर्फ दलितों के लिए आरक्षित थी।यहाँ दलित भाई-बहन दिन में कूद-कूदकर माया बहन जिंदाबाद का नारा लगाते थे और रात में उम्दा माल डकारकर,खर्राटे मारते आराम से सो जाते थे। होटल के सामने रखे ई.वी.एम. में हाथी छाप के सामने बटन दबाने पर यहाँ निःशुल्क लाजिंग-बोर्डिंग की सुंदर सुविधा थी।चुनाव के समय बार-बार घाटा होने के कारण दुकान से 'सिर्फ दलित' वाला आरक्षण का बोर्ड हटा लिया गया है। 'तिलक, तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार' का इनका नारा इधर बीते दिनों की बात हो गई है। अब बाल्मण, ठाकुर, वैश्य सब इस दुकान का परमानन्द उठा सकते हैं। इस सबके बाद भी दिनोंदिन इस फाइव स्टार होटल के आर्थिक घाटे और रेटिंग ने माया बहन को अपनी पार्टी का टिकट बेचने को मजबूर कर दिया है। पैसा दो, टिकट लो।

यह पांचवीं और अंतिम दुकान, आजकल मोदी तथा शाह बदर्स की दूर दृष्टि और पक्के इरादे के कारण विस्तार पाकर दुकान से 'माल' में परिवर्तित हो गई है। यहाँ राष्ट्रवाद के मोहर लगे सामानों की धूम मचाती बिक्र ी के कारण बड़े-बड़े दुकानदार अपना पुराना आशियाना छोड़, 'भगवा नाम केवलम' की माला जपते, रोज इस गैबी 'माल' की शरण में आ रहे हैं। इमाम-मौलवी जहां इस 'माल' को देखकर नाक-भौं सिकोड़ रहे हैं। वहीं साधु-संत अपना चिमटा बजा-बजाकर इसकी जय-जयकार कर रहे हैं। इस माल के संचालक द्वय 'सर्जिकल-स्ट्राइक' के एक्सपर्ट हैं। इनका सूत्र वाक्य है 'अयोध्या में राम -मन्दिर बनाना है' और इसके बल पर दिल्ली की सत्ता की गद्दी सदा के लिए हथियाना है। 'जय श्री राम'।

- कस्तूरी दिनेश

पर्यावरण के प्राण पंचतत्वों पर केन्द्रित उपन्यास-अघोष

रचनाकार-शान्ती तिवारी, जगदलपुर

7-प्रकृति

(12)

मुझे मां ने बताया था, यह रक्षा कवच तप्त घातक सूर्य रश्मियों का दुष्प्रभाव शोषित कर धरती के संपूर्ण जीवन चक्र की रक्षा करता है।

यदि आकाश का रक्षा कवच भी किसी कारणवश अपना कार्य न कर पाये तो ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य ही अपने श्रम कणों से धरती माता का अभिषेक कर पंचतत्वों का प्रदूषण समाप्त करता है। मुझे यह तो ज्ञात है कि पंच तत्वों के प्रदूषित होने पर मनुष्य ही उसे समाप्त करता है किन्तु यदि मानव ही प्रदूषित हो जाये? नाथ, क्या मनुष्य का प्रदूषण समाप्त करने का कोई उपाय है? श्रध्दा के स्वर में छिपा शोक स्वत प्रगट यह मनु से छुपा नही जा सका।

मनु विचार मग्न बैठे रहे। पपीहे की पिऊ पिऊ जंगल में गूंजती रही। आकाश में चांद बादलों के पीछे जा छिपा और देखते ही देखते चारों ओर फैला मध्दिम प्रकाश अचानक ही लुप्त हो गया।

प्रिये तुमने संपूर्ण सृष्टि संपूर्ण मानव जाति के हित का चिन्तन किया है। आने वाली संततियां इससे लाभान्वित हो कृतार्थ होगी यह जो अनंत, अथाह धरती है, इसने हमें जन्म दिया, हमारे पोषण की व्यवस्था की। यह हमारे समस्त पशु पक्षियों के साथ ही इस पर उग आये समस्त पेड़ पौधों हरियाली, वन सरिता, सागर सब की भी जननी है। इस पर इतलाता हुआ सागर, अठखेलियां करती नदियां, उगे पेड़ पौधे ने इसे भांति भांति के वस्त्रों से सुसज्जित किया है। अपने इसी बहुविध वस्त्रों के रूप में कभी वह धान की चादर ओढ़ लेती है तो कभी सरसों के पुष्पों से अपना श्रृंगार करती है। भांति भांति के वृक्ष भी इसने वस्त्र रूप में धारण कर रखे है अपने इन वृक्षों से लताओं से फल फूलों वनों से अपने श्रंगार के साथ यह अपनी समस्त संततियों के लिये वायु के साथ ही आहार की व्यवस्था भी करती है। अपनी सौधी सुगंध हमारे नासिका छिद्रों से हमारे शरीर में पहुंचा यह हमें नव ऊर्जा, नये उत्साह से भर देती है। वनों से निस्सृत शीतल बयार हमारे रोम छिद्रों से टकरा मौन परोपकार का मौन संदेश देती है।

हां, जीवन में नये उत्साह का संचार शीतल पवन के हमारी त्वचा में आकर टकराने से होता है, दिन भर के श्रम की थकान दूर होती है।

प्रिये, शीतल वायु हमारे रोम छिद्रों से टकरा हममें ऊर्जा भरती है तो शीतल जल का रसास्वादन हमारी जिव्हा करती है। पेय जल का स्त्रोत नदियों में तालाबों में संचित पानी ही है। धरती मां अपने वृक्ष की जड़ों के रुप में अपने गर्भ में भी अपनी संतानों के लिये पानी का संचय करती है। ये वृक्ष ही वर्षा का लगभग एक तिहाई पानी सोखकर या तो जड़ों में सुरक्षित रखते है अथवा नदियों को जन्म दे प्राणी मात्र की सेवा करते है। इन्हीं जल स्त्रोतों, नदियों के किनारे संस्कृतियां जन्म लेती है, विकसित होती है। वस्तुतः नदी दो किनारो के मध्य प्रवाहित जल धारा मात्र नहीं, यह मानव सभ्यता, मानव संस्कृति की प्रत्यक्ष जीवंत गाथा है। क्रमशः

बस्तरिया हल्बी गीत

जोनी मुंह

हो तुचो जोनी बराबर उजर मुंह के
सांगुक नी होयरे, हाय हाय सांगुक नीं होयरे...
हो तुके दखुन मंय तो बसुन रयन्दे,
रेंगुक नीं होयरे.....
सांगुक नीं होयरे हाय हाय सांगुक नी होयरे....
रेंगुक नीं होयरे होय होय रेंगुक नीं होयरे
हो तुचो जोनी.....

पन्डरी देंहने कारी लुगा फबेरे
कंवरी हाथ ने कारी चूड़ी थेबेरे
मांगने बिजरी लाली तुचो हाय....
झमर झामर चाली, तुचो-
नाचे झांय सांय झांय,कि मानकी.....
नाचे सांय झांय सांय.... हो तुचो.....

सरग तारा जसन गोदना ठोड़ी ने....
तीनपुर सुन्दर असन नांई छमे जोड़ी ने
चिकन गाले हरदी घसा हाय
मारुन पकाय बाकटी खोसा
मतवार मंय हाय हाय
री जोनी मतवार मंय हाय हाय
हो तुचो जोनी.....

जोगी.....मंय हाथके जोडुन सांगेसे धनी रे....
भोगी मंय होयले सुनुन कोइली बानी रे....
आवनी लेवनी वीकड़ खाले.... हाय,....
गुहगुम राने पन्डकी बले
नाचे सांय झांय सांय, री मानकीय....
नाचे झांय सांय झांय.....
हो तुचो....जोनी....
हो तुके दखुन....
सांगुक नीं होय
हो तुचो जोनी बराबर.....।

- जोगेन्द्र महापात्र जोगी
जगदलपुर